पिरी हल्या प्रभातमें, आऊं उथिस अवेरी।
कीं वंजाइयां वलहो, जे हुंद जागां सवेरी।। ६ ।।

प्रीतम बहुत सवेरे चले गए। मैं देर से उठी। मैं प्रीतम को कैसे खो देती यदि मैं जल्दी जाग जाती।

जीव मूहीजो जे तडे जागे, त अवसर वंजाइयां कीं।
हुंद साथ न छडियां सजणे, आडी लेहेर माया थेई नी।। ७ ।।

मेरा जीव यदि तभी जाग जाता तो अवसर न खोती और मैं प्रीतम का साथ न छोड़ती। मेरे बीच माया की लहर आ गई थी। (घर में बैठी रही)।

हांणे डिसूनी डोहे निहारियां, तां जर भरया अतांग।
महें लेहेरयुं मेर जेडियुं, व्या मछे पेरां न्हाय मांग।। ८ ।।

अब दसों दिशाओं में देखती हूं कि बहुत गहरा सागर मोहजल का भरा है। इस मोह सागर में लहरें (मजबूरियां) पर्वतों जैसी ऊंची उठ रही हैं। दूसरे बेशुमार मगरमच्छ (रिश्तेदार) हैं, जिनसे निकलने का रास्ता नहीं मिलता।

महें घूमरियूं जर जुजवा, व्या परी परी जा पूर।
हिक वेर न वेहेजे सुख करे, हेतां डिसे डुखे संदा मूर।। ९ ।।

जल के अन्दर अलग-अलग तरह की भंवरें (सांसारिक समस्याएं) पड़ती हैं। तरह-तरह से लहरों के प्रवाह (मजबूरियां) आते हैं। एक पल भी सुख से बैठ नहीं सकते। यह तो दुःख का ही घर दिखता है।

हिक घोर अंधारो व्यो अंखे न सुझे, त्रेओ हियडो न्हायम हंद।
पिरी आया मूंके पार उतारण, एहेडी धारा मंझ।। १० ।।

एक तो घोर अंधेरा है, दूसरा आंखों से दिखाई नहीं देता है। मेरे हृदय का कोई ठिकाना नहीं है। प्रीतम ऐसी विषम धारा (कठिन समय में) से मुझे पार उतारने आए थे।

मूं कारण सैयल मूंहजी, हिनमें विधाऊं पांण।
कूकडियूं करे करे, नेठ उथी वियां निरवांण।। ११ ।।

हे सखी! मेरे लिए प्रीतम स्वयं इस संसार में उतर कर आए। पुकार-पुकार कर हारकर उठकर चले गए।

हांणे कीं करियां केडा वंजां, केहेडो मूंजो हांणे हंद।
पिरी न पसां अंखिऐ, जे मूं कारण आया माया मंझ।। १२ ।।

अब क्या करूं? कहां जाऊं? मेरा कहां ठिकाना है? अब मैं उन प्रीतम को इन आंखों से नहीं देख पाती, जो मेरे वास्ते माया में आए थे।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९७ ।।

बीजी विलामणी

सजण विया मूंजा निकरी, मूं तां सुजातां न सारे रे।
मूंके चेयाऊं घणवे पुकारे रे, न कीं न्हाऱ्यो मूं दिल विचारे रे।।
से सजण हांणे कित न्हारियां।। १ ।।

मेरे प्रीतम निकल (चले) गए और मैंने इनकी पहचान नहीं की। मुझसे बहुत चिल्ला-चिल्लाकर कहा, पर मैंने दिल में कुछ भी विचार कर नहीं देखा। अब ऐसे धनी को कहां देखूं? (दर्शन करूं)।

Nijanand App

अदी रे पिरिए पांणसे जा केई, आऊंसे जे संभारियां साथ।
पांणजे काजे हिन मायामें, कींय विधाऊं आप।।२।।

हे सखी! प्रीतम ने मेरे साथ जो किया है, उसकी मैं सुन्दरसाथ को पहचान कराती हूं। हमारे वास्ते प्रीतम ने अपने आपको इस माया में किस तरह डाला?

हिक अधगुण संभारजे, अदी रे त पण लभे साह।
गुण संभारीदे सजणें, अजां को न उडे अरवाह।।३।।

प्रीतम के एक-आध गुण की पहचान हो जाती, तो हे सखी! तो भी धनी मिल जाते। अब प्रीतम के गुणों की पहचान करके यह अरवाह (अर्वा—आत्मा) उड़ क्यों नहीं जाती?

अदी रे सजण सांणें हलया, घणूं धायडियूं पाए।
खुई मुंहजो जिंदुओ जे, अजां अख न उघाडे रे।।४।।

हे सखी! धनी हमारे सामने पुकार-पुकार कर घर चले गए। मेरे जीव को आग लग जाए। यह अभी तक आंख नहीं खोलता है।

परी परी मूंके चेयाऊं, मूंके सल्लेथा से वेंण।
अखडियूं पाणी भर्याऊं, आऊं तोहे न खणां मथा नेण।।५।।

मुझे तरह-तरह से जो कहा वह वचन मेरे को चुभते हैं (खटकते हैं)। अब मुझसे आंखों में आंसू भरकर आंखें ऊंची करके नहीं देखा जाता।

अखडियूं भरे असांसे, बांह झल्ले केयाऊं गाल।
फिट फिट रे मूंजा जिंदुआ, अजां जेहेजो उही हाल।।६।।

मेरी रोती हुई आंखों की हालत में मेरी बांह पकड़ कर बातें कीं। धिक्कार है मेरे जीव को, जिसका अभी भी वैसा ही हाल है। (जैसे का तैसा है)।

हाणेंनी आऊं कीं करियां, मूंजानी केहा हवाल।
केहे मोंह गिनीने रे अद्यिूं, आंऊं करियां आंसे गाल।।७।।

अब मैं क्या करूं? मेरी कैसी हालत है? कौन-सा मुंह लेकर, हे सखी! मैं आपसे बातें करूं?

अदीबाईनी सुणो गालडी, मूंके रूअण रातो डींह रे।
पाणीनी पिरी गिंनी बेयां, हाणें फडकां मछी जींह रे।।८।।

हे सखी! मेरी बात सुनो। मुझे रात-दिन रोना है। प्रीतम पानी लेकर चले गए हैं और अब मछली की तरह तड़पना है।

वेण चई चई वलहो मूंहजो, बरया घर मणे रे।
हलया मूंजे डिसंदे, अदी कार्यूं घणूं करे रे।।९।।

मेरे प्रीतम मुझे अपनी वाणी से समझा-समझा कर घर की तरफ लौट गए। मेरे देखते-देखते, हे सखी! पुकार-पुकार कर चले गए।

Nijanand App

पिरी मूंजानी हलया, आऊं कीं चुआं जिभ्याय रे।
सजण वेर न बिसरे, मूंके लगा तरारी जा घाय रे।।१०।।

मेरा दूल्हा चला गया। मैं कैसे इस जुबान से कहूं? धनी का एक वचन भी नहीं भूलता। यह मुझे तलवार के घाव की तरह लगे हैं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २०७ ।।

खुई सा परडेहडो, जित सांगाए न्हाए सिपरी।
पिरी पुकारेनी हलया, मूंजी माया मत बेई फिरी।।१।।

आग लगे इस परदेश (माया के ब्रह्माण्ड) में जहां पर प्रीतम की पहचान नहीं है। प्रीतम पुकार कर चले गए और मेरी बुद्धि माया में लगी रही।

मूंजो जीव वढे कोरा करे, महें मिठो पाताऊं।
सजण संदो सूर ईं मारे, मंझा जीव करे रे धाऊं।।२।।

अब मैं अपने जीव को काट-काटकर टुकड़े करूं और उसमें नमक डालूं। इस तरह प्रीतम के दुःख के कारण मरूं। जीव अन्दर बैठा रोए-चिल्लाए।

जेरोनी लगो जर उथई, जीव कर करे मंझ।
वलहे संदोनी विरह ईं मारे, मूंके डिंनाऊं डूरण डंझ।।३।।

आग लगी, लपटें उठीं। जीव (विरह में) जल रहा है। प्रीतम के विरह से जीव को इस तरह से मारूं क्योंकि इसने मुझे कठोर दुःख दिया है।

मूं पिरियन से जा केई, अदी एडी न करे व्यो कोए।
सजण आया मूं कारण, आऊं अंख न खणियां तोए।।४।।

हे सखी! मैंने प्रीतम से जो किया, वैसा हे सखी! कोई दूसरा नहीं करता। प्रीतम मेरे वास्ते आए। मैंने आंख उठाकर देखा ही नहीं।

कीं करियां आऊं गालडी, मथां उखणियां की मोंह।
मूं हथां एहेडी थेई, खल लाहियां चोटी नोंह।।५।।

अब मैं कैसे बात करूं? अपने मुंह को कैसे उठाऊं? मेरे हाथ से ऐसा हुआ कि चमड़ी को नाखून से उधेड़ दूं।

तरारे गिंनी तन ताछियां, हडे करियां भोर।
पेहेलेनी खल उबती लाहियां, जीव कढां ईं जोर।।६।।

तलवार लेकर तन को छील डालूं और हड्डियों का पाउडर बनाऊं (पीस डालूं)। पहले खाल उलटी उधेडूं और इस प्रकार से जीव को तड़पा-तड़पा कर निकालूं।

भाले तरारी कटारिएं, मूंके वढे बिधाऊं झूक।
मूं अंग मूंहीं डुझण थेयां, जीव करे रे मंझ कूक।।७।।

भाला से, तलवार से, कटार से काट-काटकर इस तन के टुकड़े कर डालूं। मेरा तन ही मेरा दुश्मन हो गया है। जीव इसके अन्दर बैठा चिल्ला रहा है।

Nijanand App